कुमार जीवन - 83

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों से:-** अपने को सदा राजऋषि समझते हो? अधिकारी और ऋषि अर्थात् तपस्वी। स्व का राज्य प्राप्त होने से स्वत: ही तपस्वी बन जाते हैं। क्योंकि जब स्व का राज्य होता है तो स्वयं को आत्मा समझने से, बाप का बनने से, यही तपस्या हो जाती है। आत्मा बाप की बनी अर्थात् तपस्वी बनी। तो राज्य भी और ऋषि भी। तो सभी स्वराज्य अधिकारी बने हो? **कोई भी कर्मेन्द्रिय अपने तरफ आकर्षित न करे, सदा बाप की तरफ आकर्षित रहें। किसी भी व्यक्ति व वस्तु की तरफ आकर्षण न जाये।** ऐसे राज्य अधिकारी तपस्वी कुमार हो?

➳ _ ➳ बिल्कुल विजयी। क्योंकि वायुमण्डल तो कलियुगी है ना और साथ भी हंस और बगुलों का है। ऐसे वातावरण में रहते हुए स्वराज्यधारी होंगे तब सेफ रहेंगे। जरा भी दुनिया के वायब्रेशन की आकर्षण न हो। कोई कम्पलेन नहीं, सदा कम्पलीट। कुमारों की कम्पलेन्ट आती है?

➳ _ ➳ कुमार यदि विजयी बन जाएं तो सबसे महान हैं। क्योंकि गवर्मेन्ट भी यूथ को आगे बढ़ाती है। उसमें भी कुमार ज्यादा होते हैं। कुमार जो चाहें वह कर सकते हैं क्योंकि शक्ति बहुत होती है। लेकिन **शक्ति को व्यर्थ तो नहीं गंवाते हो। संकल्प और स्वप्न में बाप के सिवाए और कोई नहीं तब कहेंगे नम्बरवन कुमार। कुमार निर्विघ्न हो गये तो सबको निर्विघ्न बना सकते हैं।**

➳ _ ➳ **कुमारों का टाइटल ही है "विघ्न विनाशक"। किसी भी प्रकार का विघ्न, मंसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, किसी भी विघ्न के वशीभूत न हों। इसलिए बच्चों का ही टाइटल है - "विघ्न-विनाशक"।** गणेश बच्चा है ना। तो आपके यादगार में विघ्न-विनाशक नाम प्रसिद्ध है। प्रैक्टिकल बने हो तब यादगार बना है। **विघ्न-विनाशक बनने से स्वत: ही मंसा द्वारा भी सेवा होती रहेगी। वायुमण्डल भी निर्विघ्न बनता जायेगा। जैसे तत्वों से मौसम बदलती है वैसे विघ्न विनाशक बच्चों से वायुमण्डल बदल जायेगा। तो चारों ओर विघ्नविनाशक की लहर फैल जाए। सदा यही स्मृति में रखो कि - हमें विजयी वायुमण्डल बनाना है।** जैसे सूर्य स्वयं शक्तिशाली है तो चारों ओर अपनी शक्ति से प्रकाश फैलता है, ऐसे ही शक्तिवान बनो।

➳ _ ➳ कुमारों को कोई न कोई काम जरुर चाहिए, कुमार अगर फ्री हुए ता खिटखिट हो जायेगी। **कुमार बिजी रहे तो स्व का भी कल्याण, विश्व का भी कल्याण।** तो विघ्नविनाशक बन वायुमण्डल बनाने में बिजी रहो। अपनी विशेषता को इस कार्य में लगाओ। **एक-एक कुमार अनेकों को संजीवनी बूटी देने वाले महाबीर अर्थात् मूर्छित को महावीर सुरजीत करने वाले हो। तो सदा अपना यह आक्युपेशन याद रखो।** जैसे लौकिक आक्युपेशन नहीं भूलता ऐसे यह अलौकिक आक्युपेशन भी सदा याद रहे। **संगमयुग पर बाप द्वारा जो भी टाइटल मिले हैं उनकी**

स्मृति में रहो। टाइटल याद आने से स्वत: ही ज्ञान और ज्ञानदाता दोनों की याद आ जायेंगी। (29-10-1981)

➢➢ स्वराज्य अधिकारी अर्थात

➳ _ ➳ पांचो सूक्षम इन्द्रियों पर विजय

→ रूप

- आँख

→ रस

- जीभ

▶ यह इतनी सी जीभ आपको कहाँ से कहाँ घुमाती रहती है... घसीटती रहती है :- किचन से हॉस्पिटल तक

▶ भोग का बहुत गहरा संस्कार है होता है इस जीभ में

▶ यदि जीभ की मनोकामनाएं पूरण न की जाए तो यह भयंकर क्रोध भी कर सकती है

→ गंध

- नाक

→ स्पर्श

- त्वचा

→ शब्द

- मुख

➳ _ ➳ इद्रियों से उत्पन्न होने वाला सुख

→ अंततः दुःख में परिवर्तित हो जाता है

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ किसी भी देहधारी को ऊपर कोई निर्भरता नहीं / कोई भी देहधारी आधार नहीं

→ अगर शक्तिशाली बनना है तो

- अकेले खड़ा होना सीखो

➳ _ ➳ कंप्लेंट करने का संस्कार बहुत सूक्षम होता है

→ हम मुख से तो नहीं कहते परन्तु मन कंप्लेंट से भरा रहता है

- यदि इस मन को सभी के सामने खोल दिया जाए तो

▶ बहुत शर्म आएगी

→ किसी भी परिस्थिति में कोई कंप्लेंट न करना

- अध्यात्म की बहुत ऊंची अवस्था है

➳ _ ➳ ईश्वरीय प्रेम, पवित्रता और वैराग

→ आत्मा को अध्यात्म के शिखर तक पहुंचा देती है